IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विज्ञान एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन : शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश

नीलम मिश्रा
शोधार्थिनी
जे. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद

सारांश : प्रस्तुत अनुसंधान विज्ञान वर्ग एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित है। इस अनुसंधान के अंतर्गत शोधार्थिनी द्वारा विज्ञान एवम् कला वर्ग के बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के परीक्षण में अभिवृत्ति मापनी विधि का प्रयोग किया गया तथा इस विधि के लिए लिकर्ट विधि को अपनाया है।अनुसंधान में प्रदत्त संकलन हेतु आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित प्रश्नावली को संशोधित कर शोधार्थिनी द्वारा शिकोहाबाद परिक्षेत्र के अंतर्गत आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, एस. आर. डी. कॉलेज, एल. एन. कॉलेज एवम् एफ. एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन के कुल 200 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को चुना गया एवम उनकी अभिवृत्ति का परीक्षण किया गया। अनुसंधान सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण में मध्यमान, मानक विचलन एवम् 'टी'– टेस्ट परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। अनुसंधान परिणाम के निष्कर्षों द्वारा विदित हुआ कि विज्ञान एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में ज्यादा अंतर नही है दोनो लगभग समान है तथा दोनो में परस्पर सकारात्मक संबंध है।

मुख्य शब्द: शिक्षण अभिवृत्ति, बी.एड. प्रशिक्षणार्थी, शिकोहाबाद

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। यह सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है जिससे व्यक्ति के संपूर्ण गुणों का विकास होता है। अशिक्षित व्यक्ति पशु समान माना जाता है। भारतीय मनीषियों द्वारा भी शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया गया है शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का पूर्ण विकास संभव है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के साथ एक आदर्श चरित्र का निर्माण करना है। एक शिक्षा तभी सार्थक सिद्ध हो सकती है जब उसके द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हा जिससे वह अपने जीवन के प्रत्येक लक्ष्य को प्राप्त कर सके। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा को महत्व दिया जाता था इसलिए शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुल में होती थी। जिसका उद्देश्य बालक को चरित्रवान एवम् गुणवान बनाना था। शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया का केंद्र बिंदु शिक्षक होता था। इसलिए शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता था।

एक अच्छा शिक्षक अपने शिक्षण प्रक्रिया तथा अनुभवों के द्वारा बालक का विकास कर सकता है। शिक्षण एक कला है जो सभी में विद्यमान नही हो सकती है। एक अच्छी शिक्षण कला उसी व्यक्ति के अंदर विद्यमान होगी, जिसे शिक्षा के प्रति अत्यधिक लगाव हो। जैसे कि पूर्व राष्ट्रपति राधा कृष्णन जी ने कहा था की शिक्षा पर सबका अधिकार है लेकिन शिक्षक वही बने जिसके अंदर शिक्षक बनने का स्वाभाविक गुण हो। शिक्षक का पहला उद्देश्य होना चाहिए की वह अपने विद्यार्थियों को ज्ञानवान बनाने के साथ–साथ गुणवान भी बनाए। शिक्षक को चाहिए की अपने ज्ञान और अनुभवों के द्वारा शिक्षण के माध्यम से सभी विद्यार्थियों में नैतिक गुणों का समावेश करे जिससे वह समाज में अपनी भूमिका का निर्वाह कर सके। शिक्षक एक बगीया के माली की तरह होते है जो अपने बाग(विद्यालय) के फूलों को अपने ज्ञान रूपी रस से सींचते है जिससे उनके फूल भविष्य मे अपनी खुशबू चारों ओर फैला सके। व्यक्ति के जीवन मे उद्देश्य की भी भूमिका अति महत्वपूर्ण है बिना उद्देश्य के व्यक्ति का जीवन नीरस रहता है। उद्देश्यपूर्ण जीवन होने से व्यक्ति के मन मस्तिष्क में सकारात्मक विचारों का आगमन होता है जिससे विकास होता है तथा विचारो में नवीनता आती है जिससे व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है। एक प्रशिक्षित शिक्षक के लिए जरूरी है की वो अपने उद्देश्यों में स्पष्ट हो जिससे उसके विचारों में नवीनता आती रहे जिससे वह अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करता रहे। एक प्रशिक्षित शिक्षक को आगे बढ़ने के लिए खुद का आत्म अवलोकन अवश्य करते रहना चाहिए जिससे वह वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल खुद को ढाल सके।

संबंधित अनुसन्धान का अध्ययन

प्रस्तुत अनुसंधान के अंतर्गत शोधार्थिनी द्वारा विषय से सम्बंधित निम्न अनुसंधानों का अध्ययन किया जो निम्न है –

गणपति (1992) ने छात्राध्यापकों की आत्मसंकल्पना एवम् शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन शिक्षण व्यवसाय के परिप्रेक्ष्य में किया। शोध का उद्देश्य छात्र अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के बीच सहसंबंध का अध्ययन किया और पाया कि छात्र अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के प्रति अभिवृत्ति पाई गई तथा शिक्षण अभिवृत्ति के धनात्मक आत्म संकल्पना पाई गई।

मोहम्मद (2010), इसमें इन्होंने प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति में तुलना किया और प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के विद्यालय प्रबंधन क्षमता का भी अध्ययन किया, और पाया कि सहायता प्राप्त बी.एड कॉलेज में अध्ययनरत शिक्षकों पर अध्ययन करके यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि बीएड कोर्स करने वाले शिक्षकों की अभिवृद्धि अप्रशिक्षित शिक्षकों की आवृत्ति की तुलना में ज्यादा सकारात्मक होती है।

गुप्ता (2017), ने अपने शोध में कला और विज्ञान संकाय के सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म संप्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया की कला संकाय और विज्ञान संकाय के सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म संप्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान है।

अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली भिन्न – भिन्न प्रकार की क्रियाए और प्रतिक्रियाए, अभिरुचि, अभिवृत्ति, योग्यता, कार्य करने की क्षमता, शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत आते हैं। विद्यार्थियों की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करने के लिए उनको ज्यादा से ज्यादा अवसरों को तलाशने के लिए प्रेरित करना, तथा अलग–अलग प्रकार के छात्र– छात्राओं का चयन करके उनकी शिक्षण अभिवृत्ति का ज्ञान करके उचित मार्गदर्शन करना है।
समाज की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप छात्र–छात्राओं के चरित्र व व्यवहार को परिमार्जित करना शिक्षा का मुख्य लक्ष्य होता है। चरित्र व व्यवहार क पृथक तत्वों में अभिवृत्ति अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अभिवृत्ति व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं मनुष्य जो भी सीखता है अथवा जो दूसरों से ग्रहण करता है उसी से उसके व्यक्तित्व का निर्धारण होता है।
शैक्षिक अनुसंधान अधिगम की व्यवस्था एवं प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने, संबंधित विषय वस्तु की जानकारी करने, तथा धारणाओं एवं समस्याओं के समाधान के लिए भी उत्कृष्टता प्रदान करता है। इससे शैक्षिक शब्दकोश में वृद्धि के साथ–साथ शिक्षकों की गुणवत्ता कार्य करने की प्रणाली एवं शैक्षिक परिस्थितियों की संवेदनशीलता का पता चलता है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के उद्देश्य, उसके तत्व एवं परिणामों की गुणवत्ता में उचित सुधार तभी संभव है जब उचित शोध अनुसन्धान तकनीकों की मदद ली जाये। अतः शिकोहाबाद परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालयों के विज्ञान एवं कला वर्ग के बो.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिवृत्ति में समानता है या नहीं, इसकी जानकारी के लिए शोधार्थिनी द्वारा अनुसंधान का विषय चुना गया है।

अनुसंधान के उद्देश्य

- विज्ञान वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- विज्ञान और कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

❖ शून्य परिकल्पना– विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अनुसंधान का प्रारूप

शोधार्थिनी ने अपना अनुसंधान कार्य निम्न प्रारूप के आधार पर किया है –

1) अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को सम्पन्न करने के लिए शोधार्थिनी द्वारा सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

2) प्रतिदर्श

शोधार्थिनी द्वारा अनुसंधान कार्य के अंतर्गत न्यायदर्श के चुनाव के लिए साधारण यादृच्छिक न्याय दर्शन विधि के द्वारा उत्तर प्रदेश के शिकोहाबाद जिले के चार महाविद्यालयों के कुल 200 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों (50+50+50+50) का चयन किया गया।

प्रयुक्त अनुसंधान उपकरण

शोधार्थिनी द्वारा विज्ञान एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के परीक्षण में अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है जिसके लिए शोधर्थिनी द्वारा लिंकर्ट विधि को अपनाया है।

अनुसंधान कार्य की परिसीमाएं

- शोधार्थिनी द्वारा अध्ययन में 200 विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में केवल शिकोहाबाद परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले चार महाविद्यालयों आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, एस. आर. डी. कॉलेज, एल. एन. कॉलेज एवम् एफ एस कॉलेज ऑफ एजुकेशन के (50+50+50+50) बी.एड. के छात्रों को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन विज्ञान एवम् कला वर्ग शिक्षण पद्धति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के स्तर पर सम्पन्न किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियां

शोधार्थिनी द्वारा अनुसंधान विषय की परिकल्पनाओं हेतु प्राप्त समंकों का संकलन, वर्गीकरण कर विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, 'टी' – परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या

उद्देश्य प्रथमः विज्ञान वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना

तालिका 1: विज्ञान वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

वर्ग अन्तराल	7–9	9–11	11–13	13–15
आवृत्ति	28	39	25	8

उपरोक्त तालिका 1 विज्ञान वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति से प्राप्त आंकड़ों के आवृत्तियों को दर्शाती है जिससे स्पष्ट होता है कि विज्ञान वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों के वितरण की प्रकृति प्रायः सामान्य है। इस समूह का अधिकतम प्राप्तांक 15 एवं न्यूनतम प्राप्तांक 7 है। सर्वाधिक आवृत्ति वाला वर्ग 9–11 है।

उद्देश्य द्वितीयः कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना

तालिका 2: कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

वर्ग अन्तराल	7–9	9–11	11–13	13–15
आवृत्ति	25	40	27	8

उपरोक्त तालिका 2 से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के वितरण की प्रकृति लगभग सामान्य है। इस समूह का न्यूनतम प्राप्तांक 7 व अधिकतम प्राप्तांक 15 है। सर्वाधिक आवृत्ति वाला वर्ग 9–11है।

उद्देश्य तृतीयः विज्ञान एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 3: विज्ञान और कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के समूह के अनुसार मध्यमान व मानक विचलन के मान

स्तर	समूह का नाम	बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
अभिवृत्ति	विज्ञान	100	10.03	01.88
अभिवृत्ति	कला	100	9.83	01.71

उपरोक्त तालिकाओं को देखने से स्पष्ट होता है कि विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के बीच में अन्तर बहुत कम है तथा शिक्षण व्यवसाय प्रति अभिवृति समूह के मध्यमान एवम् मानक विचलन के बीच अन्तर सामान्य है।

परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना– विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 4: विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति की तुलना के लिए 'टी' मान

समूह का नाम	बी.एड. प्रशिक्षणार्थियोंकी संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	स्वातंत्र्य संख्या	'टी' मान
विज्ञान वर्ग	100	10.03	01.88	0.20	198	0.63
कला वर्ग	100	9.83	01.71			

उपरोक्त तालिका 4 के अनुसार स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति की तुलना का 'टी' मान 0.63 है जो सार्थकता स्तर 0.05 पर है जो स्वतंत्रता की श्रेणी 198 पर 'टी' का क्रान्तिक मान 1.96 है। गणना से प्राप्त आंकड़ां के आधार पर यह पाया जाता है कि 'टी' मान क्रांतिक मान से कम है (0.63 ≤ 1.96) इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। ('टी' मान ≤ क्रांतिक मान (शून्य परिकल्पना स्वीकृत)

संक्षिप्त में प्रस्तुत शोध के अंतर्गत शोधार्थिनी द्वारा प्राप्त आंकड़ों के विवरणात्मक विश्लेषण व 'टी' परीक्षण के आधार पर शून्य परिकल्पना का परीक्षण किया गया तथा प्राप्त 'टी' मानों के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत माना गया। अतः कहा जा सकता है कि विज्ञान एवं कला वर्ग के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिणामों की व्याख्या

उपरोक्त विश्लेषणों के आधार पर स्पष्ट है कि शिकोहाबाद क्षेत्र के आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, एस. आर. डी. कॉलेज, एल. एन. कॉलेज एवम् एफ. एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन के सत्र 2019–2021 में प्रशिक्षणरत विज्ञान वर्ग व कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं।

तालिका 4 से स्पष्ट ज्ञात होता है कि विज्ञान एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 10.03 एवम् 09.83 है। जो लगभग समान ही है अतः यह कहा जा सकता है कि शिकोहाबाद क्षेत्र के चयनित महाविद्यालयों के विज्ञान एवं कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति प्रायः सामान्य है।

अनुसंधान–अध्ययन का निष्कष

प्रस्तुत शोध विश्लेषणों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि शिकोहाबाद क्षेत्र के आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, एस. आर. डी. कॉलेज, एल. एन. कॉलेज एवम् एफ. एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन के विज्ञान एवं कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है।

अध्ययन की उपयोगिता

1. विज्ञान एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाकर उनमें सुधार लाया जा सकता है।
2. विज्ञान एवम् कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सम्बन्ध में अनेक उपकरणों द्वारा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सकारात्मक वृद्धि की जा सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. भटनागर आर० पी० (1962) शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, नेशनल बुक डिपो, मुरादाबाद
2. चौहान एस०एस० (1978) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान विकास परिलशिंग हाउस, नई दिल्ली
3. सारस्वत, मालती (1994): शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन, आगरा
4. राय, पारसनाथ (1996) अनुसंधान परिचय लक्ष्मी नारायण अग्रवाल अस्पताल रोड, आगरा
5. शर्मा. आर०ए० (2004) शिक्षा अनुसंधान सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
6. गुप्ता एस०पी० (2007): आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन (सांख्यिकी) शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
7. कपिल एच०के० (2008): सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में), विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
8. गफूर, के. अब्दुल; अशरफ, पी. मोहम्मद (2010): इन्क्लूसिव एजुकेशन; इज द रेगुलर टीचर्स एजुकेशन प्रोग्राम मेक डिफरेंस इन नॉलेज एंड ऐटिटूडस; पेपर प्रजेंट ऐट द इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एजुकेशन; आंध्र प्रदेश; मार्च, 19, 2010.
9. गुप्ता, आर. के. (2017): " कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म संप्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन " एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी, अप्रैल, 2017, पेज (32–37).